22/06/2021 B.A Subsidiary Paper I

Date
Page

सामाजिक समूह (Social Group) ~~का~~ एवं ~~समूह के~~ प्रकार Types

जिस तरह प्रत्येक मानव समाज में जन्म लेता है उसी तरह सामाजिक जीवन हर जगह कोई अथवा कई समूहों में बंधा होता है। समूह शब्द का प्रयोग विभिन्न प्रकार से किया जाता है। एक समूह ऐसा हो सकता है जो खेल देख रहा है और एक समूह ऐसे भी लोगों का हो सकता है जो सड़क पार कर रहे हैं। समाजशास्त्र में समूह को अन्य रूप में देखा जाता है। पहले बताया गया है कि समाजशास्त्र का मूल संबंध मनुष्य सामाजिक व्यवहार से है और इसलिए आवश्यक है कि देखा जाए कि लोग कि दूसरे से कैसे व्यवहार करते हैं। पारस्परिक व्यवहार समूहों में भी संभव है। अतः समूह का अध्ययन जरूरी है। सामाजिक समूह में निम्न बातें शामिल होती हैं।

(i) व्यक्तियों (दो या अधिक) का समूह,

(ii) एक ही नमूने के परस्पर संबंध (आवृत्ति, समान विश्वासों, मूल्यों और आदर्शों पर आधारित सामाजिक संबंधों में नियमितता होनी चाहिए) और (iii) परस्पर संबंध लगातार बने रहें।

समूहों का निर्माण कुछ मानवीय आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए होता है। मूल आवश्यकता जीवित रहने की है। समूह का एक उदाहरण परिवार है, जिसमें हमें इस आवश्यकता को पूरा करने में मदद मिलती है। अलग अलग व्यक्ति के रूप में हमारे लिए सभी सभी आवश्यकताओं को पूरा करना संभव नहीं है। समूहों के द्वारा ही हमारी अधिकांश जरूरतें पूरी होती हैं। हमें समूहों में रहने से अनेक प्रकार की संतुष्टि प्राप्त होती है। अतः हमारे लिए किसी समूह का अंग होना महत्वपूर्ण हो जाता है।

किसी समूह की मजबूती इस बात पर निर्भर करती है कि उसमें आपसी संपर्क और मिलना जुलना कितनी बार होता है तथा उनमें भावनात्मक लगाव कैसा है।

गेमाइनशॉफ्ट और गेसेलशॉफ्ट

एक विख्यात जर्मन समाजशास्त्री फर्डीनेंड टोनीस (1855 - 1936) ने विभिन्न प्रकार के समाजों की जाँच करते हुए पाया कि सामाजिक समूह दो प्रकार के हैं।

और सभी समाजों में प्राथमिक और गौण समूहों की संकल्पनाओं वाले समूह पाए जाते हैं। इसमें पाया कि छोटे सजातीय समूहों के सदस्य आमने सामने व अनौपचारिक आधार पर एक दूसरे के साथ संपर्क करते हैं। इन समूहों में सामाजिक व्यवहार पर परंपरा हावी होती है। टोनीस ने ऐसे समाज को गेमाइनशाफ्ट (वृहद् समाज) की संज्ञा दी। इस शब्द का व्यापक अर्थ है "सामुदायिक या पारंपरिक समाज"। इसकी तुलना में आधुनिक औद्योगिक और समाज जो बड़े व विजातीय होते हैं। उनके सदस्यों के बीच संबंध अवैयक्तिक औपचारिक कार्यात्मक और विशिष्ट होते हैं। टोनीस के अनुसार इन समाजों के बीच संबंध प्रायः संविदात्मक होते हैं जो परंपराओं द्वारा नियंत्रित होने के बजाय सुस्पष्ट कानूनी संविदाओं पर आधारित होते हैं। टोनिस ने ऐसे समाजों को गेसेलशाफ्ट या संबद्ध समाजों का नाम दिया है।

सामाजिक समूहों के प्रकार

सामाजिक समूहों का दो प्रकार के समूहों अर्थात (i) प्राथमिक और (ii) गौण समूह में वर्गीकरण के बात पर निर्भर है कि व्यक्ति का लगाव किसी समूहों के साथ कितना है।

(1) प्राथमिक समूह → यह एक ऐसा समूह है जिसमें इसके सदस्यों के संबंध बहुत ही निकट अथवा घनिष्ठ होते हैं और उनमें भावनात्मक लगाव होता है। इसे प्राथमिक समूह इसलिए कहते हैं क्योंकि यही वह समूह है जो मुख्य रूप से व्यक्ति के सामाजिक विचारों का पोषण करता है। इसे और अधिक स्पष्ट रूप से देखा जाए तो प्राथमिक समूह एक ऐसा समूह होता है जिसमें एक दूसरे के प्रति उनकी भावनायें ज्यादा प्रबल तथा सहयोगी होती हैं, विरोधी नहीं।

प्राथमिक समूह में कोई विशेष ऐसी भूमिका नहीं होती जो इसमें सम्मिलित व्यक्तियों को निभानी ही चाहिए। बल्कि वे अनेक भूमिकाएं निभाते हैं, जैसे पति, पिता और रोजी कमाने वाले आदि। प्राथमिक समूह का सबसे अच्छा उदाहरण परिवार है। परिवार के सदस्यों के विचारों, विश्वासों और आदर्शों को ढालने में प्राथमिक समूह की महत्वपूर्ण भूमिका स्पष्ट हो जाती है जब हम परिवार में अपने व्यवहार का विश्लेषण करते हैं और परिवार द्वारा इस सदस्य के लिए किए गए कामों को देखते हैं।

Date ....
Page ....

सामाजिक समूह (परिवार खिलाड़ी दल, समुदाय आदि) व्यक्ति और समाज के बीच कड़ी का काम भी करता है।

(ii) द्वितीयक समूह – प्राथमिक समूह के विपरीत द्वितीयक समूह होते हैं। द्वितीयक समूह में सदस्यों का आपस में बहुत ही विशिष्ट प्रकार के कार्यों के लिए संपर्क होता है। द्वितीयक समूह से संबंध निरंतर न होकर अधिकतर कभी-कभी होता है, जो व्यक्तिगत न होकर विशेष उद्देश्यों के लिए होता है। किसी कारखाने में काम कर रहे व्यक्ति द्वितीयक समूह का एक उदाहरण हैं, क्योंकि उनका आपस में संबंध कामगार के रूप में होता है। आप ध्यान दीजिए कि एक परिवार के बीच संबंध और एक कारखाने के बीच के लोगों के संबंध में कितना अंतर होता है। इससे आपको प्राथमिक और द्वितीयक समूहों के बीच का अंतर भली-भाँति समझ में आ जाएगा। समूहों की प्रकृति और उनके कार्यों को जानना सामाजिक व्यवहार के लिए जरूरी है। चूंकि समाजशास्त्र के अध्ययन के लिए सामाजिक समूहों की संकल्पना necessary है इसके लिए यहाँ प्राथमिक रूप में इसकी बात की गई है।

Dr Nishant Kumar Mishra
Asst Professor
Dept of Sociology
~~[illegible]~~
22/06/2021